बोन मैरो ट्रांसप्लांट से मिली जिंदगी को नई उम्मीद

उपचार

बोन मैरो ट्रांसप्लांट का नाम सुनकर कई मरीज हड्डियों की जटिल सर्जरी की कल्पना करते हैं. लेकिन यह ब्लड ट्रांसफ्यूजन की तरह नस के जरिए की जाने वाली प्रक्रिया है. यह ब्लड कैंसर और कई गंभीर रक्त विकारों के उपचार में नई उम्मीद बन रही है.

डॉ. नरेंद्र अग्रवाल
डीएम
हेमेटोलॉजी एवं बोन मैरो ट्रांसप्लांट फिजिशियन

बोन मैरो यानी अस्थि मज्जा हमारे शरीर की ब्लड फैक्ट्री है. यहां रेड ब्लड सेल्स, व्हाइट ब्लड सेल्स और प्लेटलेट्स बनते हैं. इसमें मौजूद स्टेम सेल्स जीवनभर नई रक्त कोशिकाएं बनाने की क्षमता रखती हैं. ल्यूकेमिया जैसे ब्लड कैंसर में ये कोशिकाएं असामान्य हो जाती हैं और स्वस्थ कोशिकाओं की जगह लेने लगती हैं. कुछ आनुवंशिक बीमारियों में भी बोन मैरो स्वस्थ रक्त कोशिकाएं नहीं बना पाता. ट्रांसप्लांट में खराब स्टेम सेल्स की जगह स्वस्थ स्टेम सेल्स स्थापित की जाती हैं.

नई तकनीक, बेहतर संभावनाएं

ट्रांसप्लांट से पहले मरीज को कीमोथेरेपी और कुछ मामलों में रेडिएशन दिया जाता है. इसे कंडीशनिंग कहते हैं. इसका उद्देश्य असामान्य कोशिकाओं को नष्ट करना और नई स्टेम सेल्स के लिए जगह तैयार करना है. अब रिड्यूस्ड-इंटेंसिटी रेजिमेन के कारण कुछ बुजुर्ग और अन्य बीमारियों से जूझ रहे मरीज भी इस उपचार का लाभ उठा सकते हैं.

स्टेम सेल्स को ड्रिप लाइन के जरिए शरीर में पहुंचाया जाता है. ये अपने आप बोन मैरो तक पहुंचकर वहां स्थापित हो जाती हैं. इसे होमिंग कहते हैं. आमतौर पर दो से चार सप्ताह में नई रक्त कोशिकाएं बनने लगती हैं. इस प्रक्रिया को एंग्राफ्टमेंट कहा जाता है.

पहले पूरी तरह मेल खाने वाले भाई या बहन का डोनर मिलना बड़ी चुनौती थी. भारत की आनुवंशिक विविधता के कारण कई मरीजों को उपयुक्त डोनर नहीं मिल पाता था. अब हाफ-मैच्ड फैमिली ट्रांसप्लांट और डोनर रजिस्ट्रियों के जरिए असंबंधित डोनर मिलने की संभावनाएं बढ़ी हैं. जीन थेरेपी भी सिकल सेल डिजीज और थैलेसीमिया जैसी बीमारियों के उपचार में नई उम्मीद जगा रही है. इसमें मरीज की अपनी स्टेम सेल्स को प्रयोगशाला में संशोधित किया जाता है, हालांकि इसकी लागत अधिक है और उपलब्धता सीमित है.

सावधानी के साथ सामान्य जीवन की ओर

ट्रांसप्लांट के बाद इम्यून सिस्टम को पूरी तरह विकसित होने में कई महीने लग सकते हैं. इस दौरान संक्रमण और ग्राफ्ट-वर्सेस-होस्ट डिजीज जैसी जटिलताओं पर नजर रखना जरूरी है. इसमें डोनर की प्रतिरक्षा कोशिकाएं मरीज के ऊतकों पर हमला करने लगती हैं. नई दवाओं और टार्गेटेड थेरेपी से इन जटिलताओं को नियंत्रित करने में मदद मिली है.

रिकवरी के दौरान नियमित जांच, संतुलित पोषण, स्वच्छता और संक्रमण से बचाव बेहद महत्वपूर्ण हैं. मरीज को डॉक्टर की सलाह के अनुसार दवाएं लेनी चाहिए और किसी भी असामान्य लक्षण की जानकारी तुरंत चिकित्सा टीम को देनी चाहिए. परिवार का भावनात्मक सहयोग भी इस लंबी प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. धीरे-धीरे मरीज अपनी शारीरिक क्षमता वापस पा सकते हैं और दैनिक गतिविधियों की ओर लौट सकते हैं.

ब्लड कैंसर का पता चलना आज भी परिवारों के लिए चिंता का कारण है, लेकिन उपचार के विकल्प लगातार बेहतर हुए हैं. बोन मैरो ट्रांसप्लांट कई बीमारियों के लिए स्थापित उपचार है. इसकी सफलता सही मरीज के चयन, अनुभवी चिकित्सा टीम और नियमित देखभाल पर निर्भर करती है.

इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि केवल जीवन को लंबा करना नहीं, बल्कि मरीज को सामान्य जीवन में लौटने का अवसर देना है. परिवार के साथ समय बिताने, बच्चों को बड़ा होते देखने और भविष्य के सपने फिर से संजोने की उम्मीद ही बोन मैरो ट्रांसप्लांट को जिंदगी की नई शुरुआत बनाती है.

व्यंग्य

दशानन का अग्नि स्नान

रवि उपाध्याय

विजयादशमी से एक दिन पहले खबर फैली कि दशहरा मैदान में खड़ा रावण का पुतला रातोंरात जलकर राख हो गया. कुंभकरण और मेघनाद के पुतले भी झुलस गए. शहर में चर्चाओं का बाजार गर्म हो गया. किसी ने इसे विरोधियों की साजिश बताया, किसी ने शॉर्ट सर्किट का नतीजा. कुछ को इसमें विदेशी ताकतों का हाथ नजर आया, तो कुछ ने इसे सामाजिक सद्भाव बिगाड़ने की कोशिश करार दिया.

मैदान में पुलिस, प्रशासन, मीडिया और यूट्यूबरों का जमघट लग गया. एक रिपोर्टर ने स्थानीय नेता से पूछा, 'आग आपने लगाई?' नेता जी बोले, 'हम क्यों लगाएंगे?' रिपोर्टर ने अगला सवाल दागा, 'तो फिर किसी को लगाते देखा?' नेता जी निरुत्तर थे.

कलेक्टर से पूछा गया कि घटना की जानकारी सुबह क्यों मिली. कलेक्टर ने पलटकर पूछा, 'आपने रात में खबर क्यों नहीं दी?' फिर पत्रकार दरोगा जी के पास पहुंचे. उन्होंने दो घंटे का समय मांगा.

इसी बीच रिपोर्टरों ने लोगों से पूछताछ शुरू की. कालूराम नामक व्यक्ति ने बताया कि रात को पटाखों की आवाज सुनाई दी थी, लेकिन त्योहार का मौसम समझकर वह सो गया. उसने सीबीआई जांच की मांग भी कर डाली. एक अन्य रिपोर्टर ने जुम्मन मियां से पूछा कि आग कैसे लगी.

वे बोले, 'हमें पहले से मालूम था कि शक हम पर ही किया जाएगा. रावण हमारा अपना था, हम उसे क्यों जलाएंगे?'

तभी कालूराम भड़क उठा. बोला, 'उन्हें जुम्मन साहब और मुझे सिर्फ कालूराम क्यों कहा? क्या हम बराबर के नागरिक नहीं हैं?' रिपोर्टर इस सवाल का जवाब तलाश ही रहा था कि दरोगा जी ने अपनी जांच पूरी कर ली. खबर आई कि मेघनाद और कुंभकरण के पुतलों से पूछताछ में राज खुल गया. उन्होंने बताया कि दशानन हर साल अपने वध की परंपरा से दुखी थे. उनका कहना था कि त्रेता युग में राम के हाथों मृत्यु गौरव की बात थी, लेकिन आज ऐसे लोगों के हाथों मरना अपमानजनक है, जिनका अपना चरित्र ही संदिग्ध है. रावण का तर्क था कि सीता का अपहरण अपराध था, लेकिन उसने उनकी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया. वह विद्वान था, फिर भी हर साल उसे बुराई का प्रतीक बनाकर जलाया जाता था. इसी अपमान से दुखी होकर उसने स्वयं अग्नि स्नान कर लिया. यह कहानी सुनकर शहर सोच में पड़ गया.

आखिर रावण का अपराध बड़ा था या उसका अहंकार? और क्या हर साल पुतला जलाने वाले अपने भीतर के रावण को भी पहचानते हैं? फैसला अब पाठकों को करना है.

जनधर्मी कवियों की जमीन

पुस्तक चर्चा

गोविन्द सेन

भीष्म साहनी ने कहा था, 'आलोचना की भाषा सरल होनी चाहिए.' राजेंद्र वर्मा की पुस्तक 'जनधर्मी कवियों की जमीन' इस कसौटी पर खरी उतरती है. इसमें जन सरोकारों से जुड़े अट्ठारह पुराने-नए कवियों पर आलोचनात्मक लेख हैं. कबीर, रहीम, सुभद्राकुमारी चौहान से लेकर नागार्जुन, शैलेंद्र, भवानीप्रसाद मिश्र, गोरख पांडे, दुष्यंत कुमार और अदम गोंडवी तक की रचनात्मक दुनिया इसमें शामिल है. 'राह दिखाते कबीर' लेख में लेखक ने उन संतों के पाखंड पर प्रहार किया है, जो दूसरों को त्याग का उपदेश देते हैं, लेकिन स्वयं ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीते हैं. वे कबीर की सादगी और जीवन-मूल्यों से सीखने की जरूरत बताते हैं.

नागार्जुन की कविता में आम आदमी की गरीबी, अभाव और संघर्ष का मार्मिक चित्रण मिलता है. उनकी प्रसिद्ध कविता 'अकाल और उसके बाद' की पंक्तियां, 'कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास', अकाल की त्रासदी को सजीव कर देती हैं.

शैलेंद्र के फिल्मी गीतों में भी जनधर्मी चेतना मुखर है. आम आदमी के दुख-दर्द और देशप्रेम को सरल शब्दों में व्यक्त करने की उनकी कला अद्भुत है. वहीं नीरज का गीत 'जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना, अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाए' सामाजिक समानता

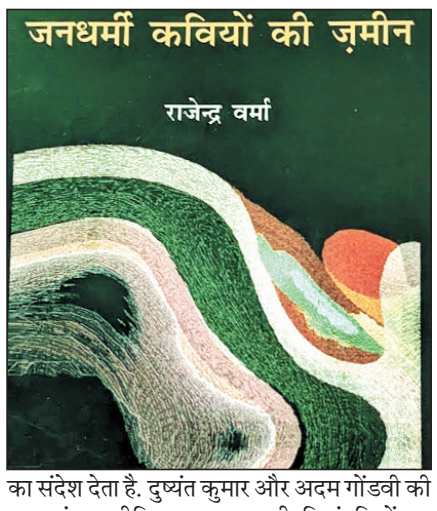

का संदेश देता है. दुष्यंत कुमार और अदम गोंडवी की रचनाएं राजनीतिक व्यवस्था की विसंगतियों पर तीखा प्रहार करती हैं. दुष्यंत का शेर 'कहां तो तय था चिरागां हरेक घर के लिए, कहां चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए' आज भी व्यवस्था पर सवाल उठाता है. अदम गोंडवी की पंक्तियां 'काजू भुने हैं प्लेट में व्हिस्की गिलास में, उतरा है रामराज्य विधायक निवास में' सत्ता के दोहरे चरित्र को उजागर करती हैं.

262 पृष्ठों की यह पुस्तक उन कवियों की आवाज को सामने लाती है, जिन्होंने जनपक्षधरता के लिए अभिव्यक्ति के खतरे उठाए. राजेंद्र वर्मा ने सहज भाषा में उनके साहित्य और सामाजिक प्रतिबद्धता को रेखांकित किया है. जनधर्मी साहित्य को समझने के लिए यह पुस्तक उपयोगी और संग्रहणीय है.

स्वास्थ्य चर्चा

जाड़ों में बढ़ता जोड़ों का दर्द

सर्दियों में अक्सर घुटनों, कमर, कंधों और हाथ-पैर के जोड़ों में दर्द और अकड़न की शिकायत बढ़ जाती है. खासकर गठिया (आर्थराइटिस) से परेशान लोगों को सुबह बिस्तर से उठते समय या देर तक एक जगह बैठे रहने के बाद अधिक परेशानी होती है. ठंड अपने आप जोड़ों को नुकसान पहुंचाती है, यह जरूरी नहीं है, लेकिन तापमान में गिरावट, शारीरिक गतिविधियों में कमी और मांसपेशियों में जकड़न दर्द को बढ़ा सकती है.

ठंड में क्यों परेशान करते हैं जोड़?

जोड़ों के दर्द के कई कारण हो सकते हैं. ऑस्टियोआर्थराइटिस में जोड़ों की सुरक्षा करने वाली उपास्थि धीरे-धीरे घिसने लगती है. वहीं रूमेटाइड आर्थराइटिस में शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली जोड़ों में सूजन पैदा करती है. सर्दियों में कम चलने-फिरने से मांसपेशियां कमजोर हो सकती हैं और जोड़ अधिक अकड़े हुए महसूस हो सकते हैं. मौसम और दर्द का संबंध हर व्यक्ति में अलग हो सकता है.

एलोपैथी में क्या है उपचार?

जोड़ों के दर्द का उपचार उसके कारण और गंभीरता पर निर्भर करता है. डॉक्टर जरूरत के अनुसार पैरासिटामोल या सूजन और दर्द कम करने वाली दवाएं, जैसे इबुप्रोफेन, लेने की सलाह दे सकते हैं.

हालांकि, इन दवाओं का इस्तेमाल अपनी मर्जी से नहीं करना चाहिए. विशेष रूप से बुजुर्गों, गुर्दे या हृदय संबंधी समस्याओं वाले लोगों और पेट में अल्सर की शिकायत वाले मरीजों को सावधानी बरतनी चाहिए.

ऑस्टियोआर्थराइटिस में नियमित व्यायाम, फिजियोथेरेपी और वजन नियंत्रित रखना उपचार के महत्वपूर्ण हिस्से हैं. कुछ मामलों में डॉक्टर लगाने वाली दर्द निवारक दवाएं या जोड़ों में इंजेक्शन की सलाह भी दे सकते हैं. रूमेटाइड आर्थराइटिस में बीमारी की प्रगति रोकने के लिए विशेष दवाओं की जरूरत पड़ सकती है. इसलिए लगातार दर्द रहने पर केवल दर्द निवारक दवाओं के सहारे न रहें.

आयुर्वेद में क्या हैं विकल्प?

आयुर्वेद में जोड़ों के दर्द को वात से जुड़ी समस्या के रूप में भी देखा जाता है. इसमें शरीर को गर्म रखने, हल्की मालिश और नियमित दिनचर्या पर जोर दिया जाता है. तिल के तेल से हल्की मालिश, गुनगुने पानी से स्नान और हल्की गर्म सिकाई से कुछ लोगों को आराम मिल सकता है. लेकिन सूजे हुए, लाल या गर्म जोड़ पर बिना चिकित्सकीय सलाह के गर्म सिकाई न करें. हल्दी और अदरक का इस्तेमाल पारंपरिक रूप से सूजन संबंधी तकलीफों में किया जाता है, लेकिन इन्हें गठिया का प्रमाणित इलाज नहीं माना जा सकता. आयुर्वेदिक औषधियां या सप्लीमेंट लेने से पहले योग्य चिकित्सक से सलाह लें. कुछ उत्पाद दूसरी दवाओं के साथ प्रतिक्रिया कर सकते हैं. निर्धारित एलोपैथिक दवाएं खुद से बंद न करें.

रोजमर्रा की आदतों से मिलेगी राहत

सुबह पांच से दस मिनट हल्की स्ट्रेचिंग करें. अपनी क्षमता के अनुसार पैदल चलें और लंबे समय तक एक ही मुद्रा में न बैठें. शरीर को गर्म कपड़ों से ढकें. भोजन में दालें, दूध-दही, हरी सब्जियां, मेवे और पर्याप्त प्रोटीन शामिल करें. विटामिन डी या कैल्शियम की कमी का संदेह हो तो डॉक्टर की सलाह से जांच कराएं.

कब डॉक्टर को दिखाएं?

यदि जोड़ में अचानक तेज दर्द, बहुत अधिक सूजन, लालिमा या बुखार हो, तो तुरंत चिकित्सकीय सहायता लें. सुबह की अकड़न लंबे समय तक बनी रहे या दर्द रोजमर्रा के कामों में बाधा डालने लगे, तो जांच कराएं. सही निदान के साथ एलोपैथी, आयुर्वेद से मिलने वाली सहायक राहत और जीवनशैली में बदलाव को चिकित्सकीय सलाह के अनुसार अपनाना अधिक उपयोगी हो सकता है.

कहानी केवल सुनने के लिए नहीं, आत्मसात करने की विधा

अनवरत कथा प्रसंग में देश के नामी कहानीकारों का कहानी पाठ और उन पर गंभीर विमर्श

आयोजन

साहित्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि अपने समय और समाज को समझने का सबसे संवेदनशील माध्यम है. कहानी जब अपने समय के सवालों से टकराती है, तो वह केवल कथा नहीं रहती, बल्कि समाज का दस्तावेज बन जाती है. कहानी केवल सुनने के लिए नहीं, आत्मसात करने की विधा है. इसी विचार को लेकर संयोजक डॉ. प्रतापराव कदम के मार्गदर्शन में अनवरत संस्था ने खंडवा में 'अनवरत कथा प्रसंग' में देश के प्रतिष्ठित कहानीकारों की कहानियों का वाचन और उन पर गंभीर आलोचनात्मक विमर्श किया. इसमें कहानियों के माध्यम से सत्ता, परिवार, स्त्री, आदिवासी जीवन, परंपरा, युवा पीढ़ी और बदलते सामाजिक सरोकारों के अनेक प्रश्न सामने आए.

डॉ. रश्मि दीक्षित

सत्ता, परिवार और स्त्री जीवन के अंतर्विरोध- कार्यक्रम चार सत्रों में हुआ, जिसमें प्रत्येक सत्र में दो कहानीकारों ने कहानी पाठ किया तथा कहानियों की समालोचना की गई. प्रथम सत्र में तरुण भटनागर ने 'हाथी इक्तेदार' तथा उदयन वाजपेयी ने 'रेस्टोरेंट' कहानी पाठ किया. आलोचनात्मक समीक्षा में जयप्रकाश ने 'हाथी इक्तेदार' को ऐतिहासिक कथा के रूप में रेखांकित करते हुए उसकी मध्यकालीन पृष्ठभूमि में छिपे समकालीन सत्ता-रूपक को सामने रखा.

सत्ता के आसपास चापलूसी, स्वार्थ और अपने अस्तित्व को बनाए रखने की प्रवृत्ति कोई नई घटना नहीं है, बल्कि इसकी जड़ें हमारे सामाजिक और राजनीतिक इतिहास में गहरी हैं. वहीं 'रेस्टोरेंट' के माध्यम से उन्होंने समाज की पितृसत्तात्मक संरचना और परिवार के लिए स्वयं को पूरी तरह समर्पित कर देने वाली स्त्री की स्थिति पर विचार किया. अंत में सिगरेट सुलगाने का प्रसंग उसकी पूरी पीड़ा, विद्रोह और आत्मबोध को एक साथ व्यक्त करता है.

सपनों की तलाश और जीवन का संघर्ष- दूसरे सत्र में कहानीकार हरि भटनागर ने 'पंडुक' तथा विमल चंद पांडे ने 'अनुयायी' कहानी का वाचन किया. इन कहानियों की समीक्षा करते हुए जयप्रकाश ने इन्हें किस्सागोई की प्रभावशाली परंपरा से जुड़ी समकालीन कहानियां बताया.

उन्होंने कहा कि दोनों रचनाएं आज के समय और व्यक्ति की मानसिकता को जीवंत करती हैं. मनुष्य जिस स्थान को बाहर से उपलब्धि समझता है, वहां पहुंचने के बाद उसे उसकी वास्तविकता का अनुभव होता है. जीवन में एक सपना पूरा होते ही दूसरा सपना सामने खड़ा हो जाता है और मनुष्य निरंतर अपनी अगली मंजिल की तलाश में संघर्ष करता रहता है. यही निरंतर जद्दोजहद जीवन को आगे बढ़ाती है.

आदिवासी जीवन, परंपरा और स्त्री की विडंबना- तृतीय सत्र में कहानीकार मनीष वैद्य ने आदिवासी समुदाय के जीवन को केंद्र में रखते हुए कहानी 'अगन मानुष' प्रस्तुत की. कहानी में आदिवासी जीवन की कठिन परिस्थितियों, रोजमर्रा के संघर्ष और प्रकृति के साथ उनके गहरे संबंध को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया. प्रकृति को बचाने की उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति संदेश देती है कि पर्यावरण संरक्षण केवल आधुनिक विमर्श नहीं, बल्कि हमारी परंपरागत जीवन-दृष्टि का भी महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है.

कहानीकार गौरीनाथ ने 'किवा?' कहानी में 'सोना बाई' के माध्यम से संगीत की पैतृक परंपरा और उसके संरक्षण के लिए अपना जीवन समर्पित कर देने वाली स्त्री की विडंबना को सामने रखा. सोना का चरित्र उस कलाकार की पीड़ा को सामने लाता है जो अपनी विरासत को बचाने के लिए स्वयं का जीवन खपा देता है, लेकिन उसके त्याग को समाज अक्सर सहज मानकर स्वीकार कर लेता है.

संचालन डॉ. सीमा कदम, अमित मिश्रा, डॉ. रश्मि दीक्षित एवं डॉ. संध्या दुबे ने किया. सतीश पटेल ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस आयोजन ने शहर की साहित्यिक विरासत को गौरवान्वित किया है. यहां कहानियां केवल सुनी नहीं गईं, बल्कि पढ़ी, समझी और प्रश्नों के साथ देखी गईं.

बदलते मूल्य और पीढ़ियों के बीच संवाद

कहानीकार विवेक मिश्र की 'और गिलहरियां बैठ गईं' में पारिवारिक संबंधों, स्त्री के त्याग और पितृसत्तात्मक व्यवस्था की गहरी पड़ताल दिखाई दी. इसमें स्त्री के परिवार के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर देने की पीड़ा को बिना किसी अतिरिक्त भावुकता के सामने रखा गया है. यह केवल कहानी की स्त्री की स्थिति नहीं, बल्कि उस सामाजिक संरचना पर प्रश्न है जिसमें स्त्री से समझौते की अपेक्षा तो की जाती है, लेकिन उसकी इच्छाओं और मौन को समझने का प्रयास कम ही किया जाता है. कहानीकार सूर्यनाथ सिंह की 'माधुरी मंगल' आज की युवा पीढ़ी और उसके माता-पिता के बीच उत्पन्न हो रहे वैचारिक अंतर को सामने लाती है. कहानी का महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि जो लोग दुनिया भर की समस्याओं और बदलावों पर बहस करते हैं, वे अपने ही घर की युवा पीढ़ी की सोच को समझने में क्यों कठिनाई महसूस करते हैं? कहानी बदलते सामाजिक मूल्यों और पीढ़ियों के बीच संवाद की आवश्यकता को रेखांकित करती है. यह युवा पीढ़ी की कहानी नहीं, बल्कि बदलते समय को स्वीकार करने और समझने की चुनौती भी है. इनकी समीक्षा करते हुए आलोचक शशि भूषण मिश्र ने इन्हें 'समाज का आईना' बताते हुए कहा कि श्रेष्ठ कहानी अपने समय की विसंगतियों, संघर्षों और अंतर्विरोधों को पाठक के सामने इस तरह रखती है कि वह स्वयं से और अपने समाज से प्रश्न करने लगे.

लघु कथा

हंसी

'इतने दांत मत दिखाया कर!' मां ने उसे स्नेह से झिड़का, 'सारा दिन हा-हा, ही-ही करती रहती है. अब बड़ी हो रही है. कल को ससुराल जाएगी, तो वहां सब बुरा मानेंगे. कहेंगे, लड़की में शऊर नाम की चीज ही नहीं है.'

'मां हंसने का भी कोई बुरा मानता है क्या?' वह फिर हंस पड़ी.

मां ने अपनी जवान होती बेटी के खिले चेहरे की ओर देखा, तो मन में एक कसक-सी उभरी. उसकी आंखों में नमी झलकी और फिर गायब हो गई.

बेटी ने मां की ओर देखा और अचानक उसका दुपट्टा खींचकर हवा में उछाल दिया. मां कुछ समझ पाती, इससे पहले ही बेटी ने उसे गुदगुदाकर हंसाना शुरू कर दिया.

मां पहले घबराई, फिर गुस्सा हुई और फिर हंसने लगी. अब वह जोर-जोर से हंस रही थी. बेटी ने गुदगुदाना बंद कर दिया था, फिर भी मां हंसती जा रही थी. वह अब यूं हंस रही थी, मानो उसकी अल्हड़ उम्र में कहीं थम गई हंसी का बांध टूट गया हो.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी